# Анна АРКАТОВА. ТОП-10 "Кубка мира - 2018".

Автор: Оргкомитет
29.12.2018 21:00

Стихотворения, предложенные в ТОП-10 "Кубка Мира по русской поэзии - 2018" членом Жюри конкурса.  Лучшие 10 стихотворений "Кубка Мира" будут объявлены Оргкомитетом 31 декабря 2018 года

*Имена авторов стихотворений будут объявлены 31 декабря 2018 года в Итоговом протоколе конкурса.*

**1 место**

**Конкурсное произведение 191.** **"Письмо брату"**

привет, Артём. у нас всё хорошо.

вчера похолодало, снег пошёл,
с утра телёнка в сени запустили.

отец не пьёт, из дома ни ногой,
всё ждёт тебя. да, ты ж у нас какой,
родней семьи – то джунгли, то пустыни.

ты снился мне: обрыв, тропинка вниз,
бежишь по ней, кричу тебе: «вернись!»
и падаю в траву, теряя силы.

вдруг лес зашевелился, стал живым,
а ты ему командуешь: «бежим!» –
и вздрогнули берёзы и осины,

послушно побежали за тобой,
попарно, в одиночку и гурьбой,
но замерли внезапно у границы –

в их кронах загорелся стыд и страх,
и плакали в беспомощных руках
привыкшие к родному месту птицы.

потом я вынимала из золы
обугленные мёртвые стволы
и красила зелёным, чтоб не броско.

приснится же такое, ну дела!
...твоя Полина снова запила,
вчера весь день стояла у киоска.

я снова без копейки – третий год.
весной поеду в город, на завод,
сбегу из-под родительской опеки.

ещё про сон... я стала хоронить
стволы... чудно, конечно... но они
давали тут же новые побеги.

**2 место**

**Конкурсное произведение 130. "Окно"**

Новостроек многоугольники,
От больнички и до яслей.
Из гимназий шагают школьники

Всё упитанней и взрослей.

Воронья поголовье склочное
Голосит из лохматых гнезд.
Ветки тополя укорочены,
Словно куцый бульдожий хвост,

Облетают цветные листики,
Кто в гербарий, а кто в компост.
И никак не отыщет истины
В самогонке дурак - матрос,
Под окошком кричит припадочно,
Приставая ко всем подряд.
А медсестры молчат загадочно
Иль латиницей говорят.

Сутки тихо плывут за сутками,
Дождь втекает в оконный глаз.
Санитарки летят за утками,
Малым клином, чуть матерясь.

Щебет - дальними отголосками,
Биография всё ясней.
Глупо всё ж умирать по осени,
И немыслимо - по весне.

Листья клёна по стеклам крабами
Лезут вверх всем законам вспять.
Разве есть у Вас к жизни жалобы
Или хвастаетесь опять?

**3 место**

**Конкурсное произведение 202. "Зыбь"**

забыться в тишине,
подмешанной во время, -
геранью на окне,
пчелой на хризантеме.

зарыться с головой
в безмолвие – и слушать,
как ветер верховой
пасёт своих телушек.

что наверху – пока

молчанием покрыто,
лишь тени рыбака
парят, полуразмыты.

где сквозь небесный лед
трава растет рудая,
визжит коловорот,
мне путь освобождая.

**4 место**

**Конкурсное произведение 302. "Прорехи"**

Майское утро. Хрущёвка. Сирень.
Папа фургон заказал на заводе.
Едем на дачу. Вещей дребедень,
кажется, не обязательных вроде.
Две керосинки и ватный матрас,
ложки, кастрюли, коробка консервов...
Всё пересчитано мамой не раз,
и всё равно наша мама на нервах.
Рокот мотора, начало пути.
Синий асфальт под колёсами вьётся.
Всё ещё, всё у меня впереди:
Лето.
Каникулы.
Солнце.

***
Горячий мох податлив и упруг,
качаются верхушки красных сосен,
и солнца ослепительного плуг
до головокружения несносен.
А после наступает тишина.
Рука назад закинута неловко.
И тонкий край полуденного сна
легко тревожит божия коровка.
Наполнена до края чаша дня.
И солнца луч, пробившись сквозь ресницы,
горит, зелёной радугой дразня,
которая не раз ещё приснится.

***
В рукотворном саду камней
голос ветра почти не слышен.
И читаются всё больней

иероглифы чёрных вишен.
В небе – клинопись птичьих стай,
а внизу горизонт бумажный.
И шкатулка чудес пуста,
и что было вчера – неважно.
Вечер пасмурный и немой,
камни в сумраке незаметней.
Крайний справа, булыжный – мой.
И, наверное, не последний.

***
Здравствуй, шерстяное Рождество,
золото игрушек в междурамьи,
и под елью, всё ещё живой,
свёртки с припасёнными дарами.
Ватный мальчик, крашеный орех,
шпиль, слегка ободранный по краю...
Их полно – во времени прорех,
и туда я руку запускаю.
Зная, что под снежной пеленой,
под листвой, чей срок судьбе проспорен,
спит в утробе тёплой земляной
завтрашняя радость спелых зёрен.

**5 - 8 места**

**Конкурсное произведение 383.** **"По декабрю"**

Ночь. Охрипшая мансарда.
Тень ольхи дугой.
Ветка выпала из сада. -
Вздрогнет под ногой.

Огонёк, далёк и редок,
Погасила мгла.
Сколько нас, таких же веток,
Сгинет до тепла.

Вьюга мечется по скату.
Дом со Спаса пуст.
Сколько лет осталось саду
Слышать веток хруст?
Быть земным, обыкновенным,
Нежиться в листве...

...

Дом в посёлке довоенном.
Дверь, подпёртая поленом.
Свет

**Конкурсное произведение 366.** **"Urbi et orbi"**

— Это что там алеет на ветке, снегирь?
— Нет, откуда: не видели с детства.
В шестиместной палате — не город, а мир,
Только странное это соседство.

Слева — Палех, а справа — березовый Плес,
Дальше — Суздаль, почти деревянный.
А Иванову россыпь гранатов принес
Кто-то бледный, от горечи пьяный.

Подождать до пяти у слепого окна,
Теребя телефон и газеты.
Как предписано, красного выпить вина,
Вдруг припомнить, зачем ты и где ты.

Отказаться от ужина; до темноты
Просидеть в тупичке коридорном.
Палех тих, но вздымаются ребра-мосты.
Плес линчует буханку проворно.

Суздаль тянется к обуви — он на дневном,
А Иваново выпишут в среду.
Это значит горячую ванну, и дом,
И узорную ложку к обеду.

Под снегами крахмальными спят города.
Пол измазан рассветом, как кровью.
И большая беда, как большая вода,
Подступает уже к изголовью.

**Конкурсное произведение 321.** **"Отплытие из О."**

В осаду мидий взяты корабли,
прильнувшие ко дну в осадке низкой.
Вода (хоть лучше к мидиям шабли)
их длинные пролистывает списки.
Стоит «Меркатор», высунув в залив
бушприт, как бы принюхиваясь к ветру,
готовый хоть сейчас, разворотив
причал, рвануться снова в кругосветку.

На нём, пересекая океан,
как воин на щите, к своим пенатам
апостол прокажённых Дамиан
под погребальной ризой плыл когда-то.
Гроб упирался в палубный контрфорс,
и ткань на нём от волн ли, слёз промокла
(...как та, что покрывала смуглый торс
отбитого ахейцами Патрокла).
Что кроется ещё за ворожбой
морской волны, откуда эти греки? –
Ветра и дюны, камни и прибой
пребудут неизменными вовеки.
Дозорный чистик тоненько свистит
из зыбкой пелены над виадуком.
На резкость эту рябь не навести,
и в воздухе солёном, близоруком
вдали видны, обманчиво малы,
не то портовых кранов пеликаны,
не то орудий смутные стволы.
А море монотонно и гортанно
твердит своё, качая дотемна
дельфинов гладкокожие триеры:
не кончена Троянская война,
не все слова досказаны Гомером.

**Конкурсное произведение 394.** **"Яд ва-шем"**

Жития - кратки, имена - вечны.
Чёрный путь горек, белый путь млечен –
Не тобой хожен, не тобой торен.
Выходи к морю, говори с морем.
Мир висит криво – волосок тонкий.
Говори с Ривкой, говори с Сонькой,
Говори с Фимкой, говори с Гершкой.
Кто из них сгинул, кто из нас грешен?
Выходи к морю, где волна в клочья -
Говори с теми, кто не стал плотью,
Не обрёл тело, не обрёл имя,
Кто не стал Лейбой, кто не стал Лией.
Вкус морской горек, чёрный путь горше.
Говори с Беллой, говори с Мойшей.
Протяни руки, научись слышать -
Кто из них, кровных, кем земля дышит,
Даст тебе руку, даст тебе имя?
Выходи к морю – становись ими.

Автор: Оргкомитет
29.12.2018 21:00

## 9-10 места

член жюри принял решение не присуждать.

| Кубок мира по русской поэзии 2018 | ЖЮРИ 1 ТУРА | Евгений МИНИН | Сергей СЛЕПУХИН | Сергей ПАГЫН | Виталий АСОВСКИЙ | Михаил КВАДРАТОВ | Анна ГЕДЫМИН | Ольга ЕРМОЛАЕВА | Александр ГАБРИЭЛЬ | Бахыт КЕНЖЕЕВ | Ирина ЦЫГАЛЬСКАЯ | Борис ГРИГОРИН | Галина КЛИМОВА | Александр КУЛИКОВ | Андрей ПЕРМЯКОВ | Марина КУДИМОВА | Надя ДЕЛАЛАНД | Михаил ГОФАЙЗЕН | Юрий КАСЯНИЧ | Владислав СЕРГЕЕВ | Дмирий ЛЕГЕЗА |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. "Летаргический сон синего кита, который..." | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 4. "Весна была запойна и звонка" | 14 | 5 | | | 8 | | 5 | | | 5 | | | 10 | | | | | | 7 | | |
| 6. "Крутится-катится" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 15. "Ни воды, ни снега" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 17. "Мой личный недоверчивый Юпитер" | 5 | | 5 | | | 9 | | | | | 5 | | | | | | | | 5 | 10 | |
| 19. "Отряд в тайге" | 18 | | | | 5 | | 5 | | | | | | | | | | | | | | 7 |
| 22. "Ялта" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 23. "Верста" | 12 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 25. "Полёт шершня" | 12 | 5 | | | | | 5 | | 5 | | | 7 | | | | | | | | 5 | |
| 28. "Пальто" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 32. "Юность" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 34. "Сама себе музыка" | 8 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 39. "Hieronymus" | 12 | | 5 | 9 | | 8 | | | | | 5 | | 7 | | | 8 | | | 5 | | |
| 51. "Страшилки нашего детства" | 12 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 53. "О сварщике Солоухове" | 20 | | | 8 | | | 9 | | | 7 | | | | | | 5 | 9 | | | | 8 |
| 56. "Лодка" | 23 | 5 | 5 | 5 | | 5 | 7 | | | | 10 | | 5 | | 5 | | 5 | | | | 5 |
| 58. "Надежда" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 65. "Дерево" | 10 | | 5 | | | | | | | 5 | | 5 | | | | | | 5 | | | 5 |
| 66. Ель граб палисандр" | 8 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 71. "Баба Нина" | 7 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 72. "В метро разговаривать неудобно" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 100. "Твоя апофеосень" | 7 | 5 | | | 7 | | | | 9 | | | 5 | 5 | | | | | | 5 | 5 | |
| 105. "Гражданская оборона" | 5 | | 10 | 5 | | | 5 | | | | 5 | | | | 10 | | 10 | | 5 | | 9 |
| 118. "Хоромушка" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 130. "Окно" | | | 9 | | | | 8 | | | | | 8 | | | 7 | | | 5 | | | |
| 136. "Офелия" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 137. "Позывной" | 5 | 8 | 8 | | 9 | 5 | 5 | | | 5 | | | 5 | | | | 8 | 7 | | 5 | |
| 143. "Башня" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 148. "Димон всенемогущий" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 154. "Багдад" | 5 | | | | | | | 5 | | | | | | | | | | | | | |
| 156. "Алёша" | 8 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 158. "Гречка" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 163. "В лобовое" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 167. "О тонких пальцах Турандот" | 5 | 5 | | | 5 | 10 | | 5 | 5 | | | 5 | | | | | | | | 7 | |

Автор: Оргкомитет
29.12.2018 21:00

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 175. "Пушкин и Сальери (заметки на полях)" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 178. "Мишка" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 181. "Дефо-рмация" | 24 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 182. "Сон кувшинки, снящийся моне" | 5 | 5 | | 5 | | 5 | | 8 | | | | | | | | 7 | 5 | | | 8 | |
| 186. "Крупа" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 191. "Письмо брату" | 28 | | | 5 | | | | 5 | 5 | 10 | 7 | 5 | | | 5 | 5 | | 10 | 5 | | 10 |
| 195. "Сказ о городской падалице" | 7 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 199. "Крым" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 202. "Зыбь" | 15 | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 5 |
| 214. "Небо и земля" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 220. "Бытие Петра и Павла" | 20 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 224. "Сопротивляемость" | 7 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 233. "Морфана" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 245. "К какому сроку.." | 15 | | | 10 | 5 | | 5 | 5 | 7 | | 5 | | 9 | | | | | | | 5 | |
| 265. "Бульонский лес" | 39 | | | | | | | 7 | 5 | 5 | | 5 | | | 5 | | 7 | | | | |
| 279. "Время осень" | 14 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 283. "На самом краешке" | 9 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 285. "Мир из пороха и бумаги" | 18 | | | | 10 | | | | | | | | | | 5 | | | | | | |
| 288. "Тим" | 18 | | | 5 | | | | | | | | | | | | | 5 | 5 | | | |
| 292. "Умная Эльза" | | | | | | | | | | 8 | | 5 | | | 5 | | | | | | |
| 301. "Медленная Мадлен" | 15 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 302. "Прорехи" | 5 | | 5 | | | | | 5 | 8 | | | 9 | 5 | 5 | 5 | | 5 | | | | 5 |
| 306. "Окно" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 320. "Пчеловодье" | 16 | | | | | | | 5 | | 9 | | | | 5 | | 9 | | | | | |
| 321. "Отплытие из О." | 27 | | | | | | | 10 | | | | 10 | | 5 | | | 5 | 8 | 10 | | |
| 334. "Феодосия" | 9 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 339. "Гули-гули" | 9 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 349. "Дрейф" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 351. "Я возвращаюсь в третий Рим" | 12 | 7 | | | | | | | 10 | | | | 5 | | | 5 | | 5 | 8 | | |
| 354. "Облака" | 10 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 364. "Промысел" | 9 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 366. "Urbi et orbi" | 5 | | | | 5 | | | | | | 8 | | | | 9 | 10 | | 5 | | | |
| 370. "Как раньше просто всё и чётко..." | 9 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 371. "Запечатанное сердце" | 8 | | | | 5 | 5 | | 9 | | 5 | 5 | | | | | | 5 | 5 | 5 | | |
| 372. "Знак" | 9 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 383. "По декабрю" | 10 | 9 | | 5 | | 7 | | | | | | | | | 8 | 5 | | | | | 5 |
| 386. "Наслоение. Расслоение. Гармония" | 5 | | 7 | | 5 | | | | | | 5 | | | | | | | | | | |
| 387. "Четыре гвоздя Борхеса" | 31 | | 5 | | | 5 | | | 5 | 5 | 9 | | 8 | | | | | | | | 5 |
| 388. "Пора бы жить своим умом..." | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 392. "Felicita" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 394. "Яд ва-шем" | 13 | | | 7 | | 5 | 10 | | 5 | | | | 5 | 10 | | 5 | | 9 | 9 | 9 | |
| 395. "Родники" | 5 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |